

16

भारत में महिलाओं की स्थिति और 'विकसित भारत 2047' में उनकी भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. पवन शर्मा

प्राचार्य, एस.एस. जैन सुबोध कॉमर्स एंड आर्ट्स कॉलेज, रामबाग सर्किल, जयपुर।

*Corresponding Author: pawantilawat@rediffmail.com

सार

“जिस प्रकार एक पक्षी केवल एक पंख के सहारे नहीं उड़ सकता, ठीक उसी प्रकार कोई भी राष्ट्र अपनी महिलाओं की स्थिति में सुधार किए बिना प्रगति नहीं कर सकता।”

—स्वामी विवेकानंद

यह शोध पत्र भारतीय समाज में महिलाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, समकालीन सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य और भारत सरकार के महत्वाकांक्षी विजन 'विकसित भारत 2047' को प्राप्त करने में उनकी अपरिहार्य भूमिका का एक गहन और विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। किसी भी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास उसकी आधी आबादी को मुख्यधारा में शामिल किए बिना असंभव है। समकालीन सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार, भारत की महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर में सुधार देखा गया है, लेकिन इसके साथ ही ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच विसंगतियाँ, डिजिटल विभाजन और सुरक्षा जैसे संरचनात्मक मुद्दे आज भी बड़ी चुनौतियाँ हैं। यह शोध वास्तविक जीवन के उदाहरणों के माध्यम से इस बात को रेखांकित करता है कि 'विकसित भारत' के स्वप्न को साकार करने के लिए पारंपरिक 'महिला सशक्तिकरण' के प्रतिमान से आगे बढ़कर 'महिला नेतृत्व वाले विकास' को केंद्र में रखना होगा

शब्दकोश: महिला स्वाभिमान, आत्मनिर्भरता, बदलता परिप्रेक्ष्य।

प्रस्तावना

21वीं सदी के वैश्विक मंच पर भारत तीव्र आर्थिक विकास और तकनीकी नवाचार के साथ एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक भारत को एक उच्च आय वाली, पूर्णतः विकसित अर्थव्यवस्था में रूपांतरित करने का राष्ट्रीय संकल्प है। ऐतिहासिक साक्ष्य गवाह हैं कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम पैमाना वहाँ की महिलाओं की स्थिति होती है।

विगत कुछ दशकों में भारतीय महिलाओं ने शिक्षा, अंतरिक्ष विज्ञान, रक्षा, और कॉर्पोरेट जगत में उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त की हैं हालांकि, पितृसत्तात्मक मानसिकता, अवैतनिक

देखभाल कार्य का बोझ और आर्थिक अवसरों की असमानता अभी भी उनके पूर्ण उत्थान के मार्ग में अवरोधक हैं। यह शोध पत्र महिलाओं के बहुआयामी विकास का विश्लेषण करता है और यह दर्शाता है कि कैसे उनका सर्वांगीण उत्थान 'विकसित भारत' की आधारशिला है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और सामाजिक विकास

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति का इतिहास अत्यंत गतिशील और उतार-चढ़ाव से भरा रहा है। इसे चार प्रमुख चरणों में समझा जा सकता है:

- **वैदिक काल (प्राचीन भारत):** ऋग्वैदिक काल में महिलाओं को समाज में पुरुषों के समान अधिकार और अत्यधिक सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। उन्हें उच्च शिक्षा (उपनयन संस्कार) का अधिकार था। गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा और घोषा जैसी विदुषी महिलाओं ने दार्शनिक बहसों में भाग लिया और वेदों की ऋचाओं की रचना की। विवाह के मामले में उन्हें स्वतंत्रता थी और 'अर्धांगिनी' के रूप में धार्मिक अनुष्ठानों में उनकी उपस्थिति अनिवार्य थी।
- **उत्तर वैदिक और मध्यकाल (पतन का दौर):** मनुस्मृति के कालखंड और बाद में विदेशी आक्रमणों के दौर में सामाजिक अस्थिरता बढ़ी, जिसके कारण महिलाओं की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा दिया गया। बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, जौहर और देवदासी जैसी कुप्रथाओं ने समाज को जकड़ लिया। महिलाओं को केवल चारदीवारी के भीतर सीमित कर दिया गया और उन्हें संपत्ति के अधिकारों से वंचित कर दिया गया।
- **औपनिवेशिक काल और समाज सुधार आंदोलन:** 19वीं सदी में राजा राममोहन राय (सती प्रथा उन्मूलन), ईश्वर चंद्र विद्यासागर (विधवा पुनर्विवाह), ज्योतिराव फुले और सावित्रीबाई फुले (महिला शिक्षा) के प्रयासों ने सामाजिक चेतना जागृत की।
- **स्वतंत्रता संग्राम:** महात्मा गांधी के आह्वान पर देश की लाखों महिलाओं ने सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलनों में भाग लिया। सरोजिनी नायडू, एनी बेसन, अरुणा आसिफ अली, और कैप्टन लक्ष्मी सहगल जैसी महिलाओं ने न केवल मोर्चे संभाले, बल्कि भारतीय महिलाओं के लिए राजनीतिक चेतना के नए द्वार खोले।

समकालीन स्थिति: आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक आयाम

आधुनिक भारत में महिलाओं की स्थिति का आकलन करने के लिए इसे तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

- **आर्थिक आयाम और श्रम बल भागीदारी**

भारत की आर्थिक प्रगति में महिलाओं का योगदान निरंतर बढ़ रहा है, लेकिन इसकी प्रकृति जटिल है:

- **श्रम बल के आंकड़े:** आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर जो 2017-18 में लगभग 23.3% थी, वह हाल के वर्षों में बढ़कर ग्रामीण क्षेत्रों के सहयोग से 40.3% के स्तर को छू चुकी है। हालांकि, शहरी क्षेत्रों में महिला श्रम बल की भागीदारी अभी भी लगभग 25.4% पर स्थिर है, जो एक बड़ी चिंता का विषय है।
- **कृषि का महिलाकरण:** ग्रामीण क्षेत्रों में पुरुष रोजगार के लिए शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं, जिसके कारण कृषि कार्य में महिलाओं की हिस्सेदारी 64% से अधिक हो चुकी है। वे भोजन उत्पादन के लगभग 70% कार्यों को संभाल रही हैं, लेकिन भूमि स्वामित्व अधिकारों की कमी के कारण उन्हें संस्थागत ऋण मिलने में कठिनाई होती है।
- **स्टेम में नेतृत्व:** भारत में उच्च शिक्षा के अंतर्गत विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित क्षेत्रों में महिलाओं का नामांकन 42.57% है। यह वैश्विक स्तर पर (अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देशों से भी) अधिक है। हालांकि, कॉर्पोरेट बोर्ड्स और वरिष्ठ प्रबंधकीय पदों पर महिलाओं की उपस्थिति केवल 13.1% है, जिसे 'ग्लास सीलिंग' कहा जाता है।
- **सामाजिक, स्वास्थ्य और शैक्षणिक आयाम**
 - **शैक्षणिक प्रगति:** भारत ने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में 96.6% लैंगिक समानता प्राप्त कर ली है। सर्वशिक्षा अभियान और 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' ने स्कूल छोड़ने वाली लड़कियों की संख्या में भारी कमी की है।
 - **स्वास्थ्य और पोषण:** मातृ मृत्यु दर में अभूतपूर्व सुधार हुआ है। संस्थागत प्रसव में वृद्धि के कारण महिलाओं के स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार हुआ है। हालांकि, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में 15 से 49 वर्ष की लगभग 50% महिलाएं आज भी एनीमिया (रक्तअल्पता) से पीड़ित हैं, जो पोषण सुरक्षा की कमी को दर्शाता है।
- **राजनीतिक सशक्तीकरण**

राजनीतिक भागीदारी सामाजिक न्याय की पहली सीढ़ी है:

 - **स्थानीय शासन:** 73वें और 74वें संविधान संशोधन के माध्यम से पंचायतों और नगर निकायों में महिलाओं के लिए 33% से 50% तक सीटें आरक्षित की गईं। आज भारत में 14 लाख से अधिक निर्वाचित महिला प्रतिनिधि जमीनी स्तर पर नेतृत्व कर रही हैं।
 - **संसद और विधानमंडल:** राष्ट्रीय स्तर पर 18वीं लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या लगभग 13.6% है। इस ऐतिहासिक कमी को दूर करने के लिए भारत

सरकार द्वारा 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' पारित किया गया है। इसके लागू होने से लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% सीटें आरक्षित हो जाएंगी, जो नीति-निर्माण में क्रांतिकारी बदलाव लाएगा।

भारत में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और 'विकसित भारत 2047' के राष्ट्रीय लक्ष्यों को समझने के लिए सांख्यिकीय सारणियाँ :-

सारणी 1: भारत में महिला श्रम बल भागीदारी दर का बदलता परिदृश्य

वित्तीय वर्ष	ग्रामीण भागीदारी	शहरी भागीदारी	कुल राष्ट्रीय भागीदारी
2017-18	24.6	20.4	23.3
2019-20	33.0	23.3	30.0
2019-20	36.6	23.8	32.8
2023-24	41.5	25.4	37.0
2025-26 (वर्तमान)	44.2	27.1	40.3
2047 (विकसित भारत का लक्ष्य)	>55.0	>45.0	>50.0

(स्रोत: आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण - सांख्यिकी मंत्रालय भारत सरकार)

सारणी 2: प्रमुख सामाजिक-स्वास्थ्य सूचकांकों में सुधार

सूचकांक	NFHS-4 (2015-16)	NFHS-5 (2019-21)	समकालीन डेटा (2025-26)	विकसित भारत 2047 का लक्ष्य
मातृ मृत्यु दर प्रति 1 लाख जीवित जन्म	130	97	78	<30 (शून्य निवारणीय मृत्यु)
संस्थागत प्रसव (Institutional Deliveries)	78.9%	88.6%	94.2%	100%
महिला साक्षरता दर (Female Literacy Rate)	68.4%	71.5%	77.0%	100%
बैंक खाते का उपयोग करने वाली महिलाएं	53.0%	78.6%	89.5%	100%

सारणी 3: विकसित भारत 2047 के स्तंभ और 'महिला-नेतृत्व वाला विकास'

क्षेत्र/आयाम	वर्तमान स्थिति	विकसित भारत 2047 का विजन
राजनीतिक प्रतिनिधित्व (संसद)	13.6%	33.0% (नारी शक्ति वंदन अधिनियम के माध्यम से)
वरिष्ठ प्रबंधकीय पद	13.1%	न्यूनतम 40.0%
उच्च शिक्षा में STEM नामांकन	42.57%	50.0% (वैश्विक स्तर पर अग्रणी स्थान बनाए रखना)
ग्लोबल जेंडर गैप रैंक	145 देशों में	131वीं शीर्ष 30 देशों में स्थान बनाना

उदाहरण 1: अंतरिक्ष और रक्षा क्षेत्र में तकनीकी नेतृत्व (इसरो और राफेल की उड़ान)

- **इसरो (ISRO) की रॉकेट वूमेन:** भारत के सफल चंद्रयान-3 मिशन में डॉ. रितु करिधल श्रीवास्तव (मिशन डायरेक्टर) और कई अन्य महिला वैज्ञानिकों ने मुख्य भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन में टेसी थॉमस (जिन्हें 'मिसाइल वूमेन ऑफ इंडिया' कहा जाता है) ने अग्नि-IV और अग्नि-V मिसाइल परियोजनाओं का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया।
- **रक्षा मोर्चे पर नारी शक्ति:** शिवांगी सिंह भारत की पहली महिला राफेल लड़ाकू विमान पायलट बनीं, जबकि कैप्टन शिवा चौहान दुनिया के सबसे ऊंचे युद्धक्षेत्र सियाचिन ग्लेशियर पर तैनात होने वाली पहली महिला सैन्य अधिकारी बनीं। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि विकसित भारत की सुरक्षा संरचना में महिलाएं अब सिर्फ सहायक नहीं, बल्कि अग्रिम पंक्ति का नेतृत्व कर रही हैं।

उदाहरण 2: ग्रामीण अर्थव्यवस्था का रूपांतरण (ड्रोन दीदी और लखपति दीदी केस स्टडी)

- **राधा देवी, उत्तर प्रदेश:** एक साधारण गृहणी से 'ड्रोन दीदी' बनी राधा देवी का उदाहरण अत्यंत प्रासंगिक है। सरकार की नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत प्रशिक्षण प्राप्त कर वह अब अपने गाँव में कीटनाशकों के छिड़काव और फसलों की निगरानी के लिए रिमोट कंट्रोल ड्रोन संचालित करती हैं। इससे उनकी मासिक आय ₹12,000 से बढ़कर ₹35,000 हो गई है। यह उदाहरण दर्शाता है कि ग्रामीण महिलाएं किस प्रकार पारंपरिक कृषि को आधुनिक और वैज्ञानिक बना रही हैं।
- **लखपति दीदी और स्वयं सहायता समूह:** राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में 'राजीविका' (स्वयं सहायता समूह) के माध्यम से लाखों महिलाओं ने डेयरी, हस्तशिल्प और जैविक खेती के क्षेत्र में सूक्ष्म उद्यम शुरू किए हैं, जिससे वे प्रति वर्ष ₹1 लाख से अधिक की कमाई कर 'लखपति दीदी' बन चुकी हैं।

उदाहरण 3: कॉर्पोरेट जगत और स्टार्टअप इकोसिस्टम

- **फाल्गुनी नायर:** उन्होंने 50 वर्ष की आयु में सौंदर्य और फैशन ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म 'नायका' की शुरुआत की और इसे भारत के सबसे सफल यूनिคอร์न स्टार्टअप्स में से एक बनाया। वह भारत की सबसे सफल स्व-निर्मित महिला अरबपति हैं।
- **किरण मजूमदार-शॉ:** उन्होंने बायोटेक के क्षेत्र में उस समय कदम रखा जब भारत में इस क्षेत्र को कोई नहीं जानता था। आज 'बायोकान' वैश्विक स्तर पर दवाओं की आपूर्ति करने वाली शीर्ष कंपनियों में शुमार है। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि वैश्विक बाजार में भारत की आर्थिक धाक जमाने में महिला उद्यमी सबसे आगे हैं।

मुख्य चुनौतियाँ

विकास की इस तीव्र गति के बावजूद, कुछ ऐतिहासिक और संरचनात्मक बाधाएं भारत को लैंगिक समानता के पूर्ण लक्ष्य से दूर रखती हैं:

- **ग्लोबल जेंडर गैप सूचकांक में स्थिति:** वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम 'ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट' में भारत निचले पायदानों पर है। यद्यपि शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में भारत का प्रदर्शन सराहनीय है, परंतु आर्थिक भागीदारी और अवसर के मोर्चे पर लैंगिक अंतर अभी भी बहुत बड़ा है।
- **अवैतनिक देखभाल कार्य:** भारतीय समाज में घरेलू कार्यों और बच्चों/धुजुर्गों की देखभाल की प्राथमिक जिम्मेदारी महिलाओं पर डाल दी जाती है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के टाइम-यूज सर्वे के अनुसार, भारतीय महिलाएं पुरुषों की तुलना में कई गुना अधिक समय अवैतनिक घरेलू कार्यों में व्यतीत करती हैं। विवाह और मातृत्व के बाद कई कुशल कामकाजी महिलाओं को अपना करियर छोड़ना पड़ता है, जिसे अर्थशास्त्र में 'मदरहुड पेनाल्टी' कहा जाता है।
- **'शिक्षा का विरोधाभास':** भारत में एक अजीब प्रवृत्ति देखी गई है जहाँ महिलाओं की शैक्षणिक योग्यता बढ़ने के बावजूद उनकी बेरोजगारी दर में वृद्धि हो जाती है। इसका कारण यह है कि उच्च शिक्षित महिलाएं सुरक्षा चिंताओं या सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण असंगठित या असुरक्षित क्षेत्रों में काम नहीं करना चाहतीं, और संगठित क्षेत्र में उनके अनुकूल लचीले रोजगार की कमी है।
- **महिला सुरक्षा और सामाजिक मानदंड:** राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े दर्शाते हैं कि घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर उत्पीड़न और सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षा की कमी महिलाओं की गतिशीलता को बाधित करती है। सुरक्षा की चिंता के कारण कई परिवार अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा या रात्रिकालीन नौकरियों के लिए बाहर भेजने से कतराते हैं।

नीतिगत प्रयास: बजट और जेंडर बजटिंग

भारत सरकार ने विकासात्मक नीतियों में महिलाओं की प्राथमिकता तय करने के लिए जेंडर रिस्रॉन्सिव बजटिंग को एक प्रभावी उपकरण बनाया है।

- **बजटीय आवंटन:** हालिया केंद्रीय बजट में लैंगिक संवेदीकरण और महिलाओं के कल्याण के लिए ऐतिहासिक ₹5.01 लाख करोड़ का आवंटन किया गया है, जो पिछले वित्तीय वर्षों की तुलना में निरंतर दोहरे अंकों में वृद्धि को दर्शाता है। यह कुल केंद्रीय बजट का लगभग 9.37% है।

- **मिशन शक्ति:** महिलाओं की सुरक्षा, संरक्षण और सशक्तिकरण के लिए इस एकीकृत योजना के तहत 'संबल' बेंटी बचाओ बेंटी पढ़ाओ, महिला हेल्पलाइन) और 'सामर्थ्य' (कामकाजी महिला छात्रावास) घटकों को सुदृढ़ किया जा रहा है।
- **वित्तीय समावेशन (मुद्रा योजना का उदाहरण):** प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत बांटे गए कुल ऋणों का लगभग 68% हिस्सा महिला उद्यमियों को प्राप्त हुआ है, जिसने जमीनी स्तर पर करोड़ों महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ा है।

भावी रणनीति और सुझाव

'विकसित भारत 2047' के लक्ष्य को समय सीमा के भीतर प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित रणनीतियों को अपनाना अनिवार्य है:

- **केयर इकोनॉमी में निवेश:** कामकाजी माताओं के लिए कार्यस्थलों पर गुणवत्तापूर्ण और किफायती शिशु गृह सुविधाओं को कानूनी रूप से अनिवार्य किया जाना चाहिए। इससे महिलाएं मातृत्व के बाद भी श्रम बल में टिकी रह सकेंगी।
- **सुरक्षित बुनियादी ढांचा और स्मार्ट परिवहन:** सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों को महिलाओं के अनुकूल और सुरक्षित (सीसीटीवी, महिला सुरक्षा कर्मी, बेहतर लाइटिंग) बनाना होगा ताकि वे बिना किसी भय के आर्थिक गतिविधियों में भाग ले सकें।
- **समान काम के लिए समान वेतन:** कॉर्पोरेट और असंगठित दोनों क्षेत्रों में लैंगिक वेतन अंतर को समाप्त करने के लिए श्रम कानूनों का कड़ाई से प्रवर्तन आवश्यक है।
- **डिजिटल और वित्तीय समावेशन:** ग्रामीण क्षेत्रों में महिला स्वयं सहायता समूहों को उन्नत वित्तीय साक्षरता, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल्स का प्रशिक्षण देकर वैश्विक बाजार से जोड़ना होगा।
- **सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन:** लैंगिक समानता केवल आर्थिक या कानूनी विषय नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक सुधार है। प्राथमिक शिक्षा के स्तर से ही लड़कों को लैंगिक संवेदीकरण का पाठ पढ़ाना होगा ताकि पितृसत्तात्मक रूढ़ियों को तोड़ा जा सके।

निष्कर्ष

भारत में महिलाओं की स्थिति का इतिहास और वर्तमान इस बात का प्रतीक है कि भारतीय नारी ने विपरीत परिस्थितियों में भी सदैव अपनी क्षमता का लोहा मनवाया है। अंतरिक्ष की असीम ऊंचाइयों से लेकर ग्रामीण खेतों में ड्रोन उड़ाने तक, आज की नारी 'विकसित भारत 2047' की वास्तविक निर्माता है। 'महिला-नेतृत्व वाला विकास' केवल एक नीतिगत नारा नहीं, बल्कि आर्थिक प्रगति की एक अनिवार्य आवश्यकता है। जब भारत की हर बेंटी शिक्षित, सुरक्षित, आत्मनिर्भर और नेतृत्व करने में सक्षम होगी, तभी भारत का आर्थिक,

सामाजिक और आध्यात्मिक उत्थान संभव होगा। नारी शक्ति का यह पुनरुत्थान ही 2047 के नए, सशक्त और आत्मनिर्भर भारत की वास्तविक पहचान बनेगा।

संदर्भ (References)

1. सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI), भारत सरकार – आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) वार्षिक रिपोर्ट.
2. विश्व आर्थिक मंच – ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट, जिनेवा.
3. वित्त मंत्रालय, भारत सरकार – केंद्रीय बजट एवं व्यय रूपरेखा (विवरण 13: जेंडर बजट).
4. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार – राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) रिपोर्ट.
5. नीति आयोग – 'विकसित भारत @2047: युवाओं की आवाज' कार्ययोजना दस्तावेज।

